2 अगस्त 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 9 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (प्रथम), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

स्वर्ण जयंती के अवसर पर -

अमेरिका में हुई अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

इस वर्ष टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती के अवसर पर अमेरिका के अनेक नगरों में जून एवं जुलाई माह में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

1. डलास (टेक्सास) - दिनांक 7 से 13 जुलाई तक**डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा ग्रन्थाधिराज **समयसार की 6 एवं 7वीं** गाथा के आधार से प्रतिदिन प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन मुमुक्षुओं के घरों पर एकत्रित होकर सभी ने तत्त्वचर्चा का भरपूर लाभ लिया।

2. शिकागो - यहाँ जैन सोसायटी ऑफ मेट्रोपोलिटन शिकागो द्वारा आयोजित प्रवचन शृंखला में दिनांक 14 से 30 जून तक प्रतिदिन **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के प्रात: अनादि अनंत त्रिकाली ध्रुव कारण परमात्मा के स्वरूप को समझाते हुये भेदविज्ञान, सम्यग्दर्शन, आत्मानुभूति पर अत्यंत मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन हुये।

दिनांक 22 से 30 जून तक तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा समयसार का सार पर सारगर्भित व मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 5 से 12 जुलाई तक **पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा प्रात: युगलजी कृत सिद्धपूजन पर एवं रात्रि में समयसार कलश 144 पर प्रवचन का लाभ मिला। शनिवार व रविवार को शिविर के अन्तर्गत प्रवचनों के साथ-साथ सामूहिक पूजन का भी आयोजन हुआ। **- तन्मयभाई शाह**

3. क्लीवलैण्ड - यहाँ दिनांक 17 से 22 जून तक **पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई। जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धांत अकर्त्तावाद, कर्म सिद्धांत, प्रयोजनभूत तत्त्व, गृहीत-अगृहीत मिथ्यात्व आदि विषयों पर सरल भाषा में प्रवचनों का लाभ मिला। 2 घंटे के प्रत्येक प्रवचन के बाद शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया। प्रवचन का सार जैन सोसायटी के अध्यक्ष कल्पेश शाह ने व्यक्त किया। शनिवार व रविवार को शिविर का आयोजन हुआ। एक दिन टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती का आमंत्रण दिया गया। **- चन्द्रकुमार जैन**

4. मयामी (फ्लोरिडा) - यहाँ जैन सोसायटी ऑफ साउथ फ्लोरिडा द्वारा 20 से 26 जून तक **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन प्रात: समयसार के संवर अधिकार पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त सायंकाल तत्त्वार्थसूत्र पर सारगर्भित प्रवचन हुये। शनिवार और रविवार को विशेष रूप से सामूहिक जिनेन्द्र पूजन एवं जिनागम के महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर दो-दो घंटे के प्रवचनों का लाभ मिला।

5. वाशिंगटन डी सी - यहाँ मैरीलैण्ड स्थित जैन मंदिर में दिनांक 27 जून से 30 जून तक चार दिवसीय प्रवचनों में **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ के आधार से क्रिया परिणाम अभिप्राय विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आयोजन में श्रीमती रंजनबेन-तलकभाई एवं शचि-चिराग कपाड़िया का सक्रिय सहयोग रहा।

6. न्यूयॉर्क - यहाँ दिनांक 15 से 22 जून तक **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा तत्त्वचर्चा का लाभ मिला।

7. न्यूजर्सी - यहाँ फ्रैकलिन स्थित जैन मंदिर में श्री टोडरमल स्मारक के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर दिनांक 1 से 5 जुलाई तक जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(JAANA)** द्वारा 16वें वार्षिक शिविर का आयोजन बहुत धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा प्रतिदिन प्रात: 8 बजे से रात्रि 9 बजे तक तत्त्वज्ञान की गंगा प्रवाहित की गई।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: 2 घंटे डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित समयसार महामंडल विधान का प्रथम बार आयोजन हुआ। शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनसार की गाथा 104-105 पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के मोक्षमार्गप्रकाशक (सात तत्त्व संबंधी भूल) पर तथा पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के पुरुषार्थसिद्धिउपाय पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। शिविर के मध्य पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती का वृहद् स्तर पर आयोजन किया गया, लगभग डेढ घंटे चले इस आयोजन में विगत 50 वर्षों में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार के अभूतपूर्व कार्य के संदर्भ में प्रोजेक्टर के माध्यम से वीडियो पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र.

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

संजू भी कौन-सा सुखी था। चारों ओर से उपेक्षित, माथे पर बदनामी का सेहरा बाँधे, भूखा-प्यासा, यहाँ-वहाँ मारा-मारा फिरता। अपराधवृत्ति से ग्रसित, भयाक्रान्त, सशंकित और आतंकित होने से उसकी तो सूरत ही बदल गई थी। सारा शरीर काला पड़ गया था, कुपोषण का शिकार और दुर्व्यसनों की आदत पड़ जाने से बीमार भी रहने लगा था। उसका दु:ख नगर निवासियों से भी नहीं देखा जाता था। अत: आये दिन लोग सेठ सिद्धोमल को समझाते थे।

''सेठजी ! क्या करोगे इस अटूट संपत्ति का ? अगले जन्म में साथ तो जायेगी नहीं यह। पुलिस को कब तक खिलाते-पिलाते रहोगे इस तरह ? अरे किसी तरह संजू से ही समझौता कर लो। उस बेचारे का ऐसा दोष भी क्या है ? जो आपने उसे घर से ही निष्कासित कर दिया है। यह तो ककड़ी के चोर को कटार मारने जैसा दण्ड दे दिया आपने। अब मुसीबत के तूफानी थपेड़ों में वघूले के पत्ते की तरह इधर-उधर गिरना-पड़ना तो उसकी नियति ही बन गई है। अत: हमारी तो यही सलाह है कि गुस्सा थूको और संजू को गले लगा लो।''

लोगों को क्या पता था कि सेठजी स्वयं भी संजू के लिये तड़प रहे हैं, अत: उनका समझाना तो स्वाभाविक ही था, सेठजी को भी उन लोगों पर क्रोध नहीं आया, उन्होंने उन्हें प्रेम से जवाब दिया -''हाँ ! भाई तुम ठीक कहते हो, मैं भी इसी प्रयत्न में हूँ कि उसकी वापसी का कोई रास्ता मिल जाये पर...।''

सेठ सिद्धोमल को एक दिन बैठे-बैठे विचार आया कि विज्ञान भी तो कभी संजू का ही साथी था। उसके बारे में भी तो यही सब सुनने को मिला करता था, जो आज संजू के बारे में सुनता रहता हूँ। वह कैसे सुधरा ? उसके जीवन में यह अनायास परिवर्तन कैसे आया ? इस बात का पता लगाना चाहिये। काश! उसी उपाय से मेरा बेटा संजू भी सुधर जाये, यदि वह पुन: सन्मार्ग पर आ जाये तो मेरा शेष जीवन भी सुख से बीत जाये और वह भी दर-दर की ठोकरें खाने से बच जाये।''

उसके विद्रोही होने में अकेले उसी का दोष नहीं है, मैं भी एक कारण हूँ। भले ही मेरा भावना गलत नहीं थी, पर तरीका तो सही नहीं था, फिर वह तो बालक ही है, बालकों में समझ ही कितनी होती है, वे तो हरे बांस की तरह होते हैं। जैसा चाहता मोड़ सकता था, पर मैंने तो यों ही मरोड़ दिया उस छोटे से पौधे को, मैं ही कहीं चूका हूँ। खैर ! जो हुआ सो तो हो ही गया। अब उस पर पश्चाताप करने से क्या लाभ ? अब तो आगे इस दिशा में क्या हो सकता है ? यही एकमात्र विचारणीय है।

इधर विज्ञान भी सोच रहा था कि -''एक दिन संजू के पिता सेठ सिद्धोमल से मिलकर यदि उन्हें संजू की परिस्थिति का ज्ञान कराया जाये तो संभवत: उनका हृदय पिघल सकता है और वे उसे अपना सकते हैं।

और संजू भी तो अब दुर्व्यसनों के भले-बुरे सब प्रकार के कटु अनुभव ले चुका है, अत: उसे पलटने में भी अब अधिक समय नहीं लगेगा। यदि उसे पिता की पुन: शरण मिलने की आशा दिलाई जाये और विद्या की भाँति ही किसी योग्य लड़की से रिश्ते का आश्वासन देकर उसे सद्गृहस्थ का जीवन जीने की प्रेरणा दी जावे तो वह अवश्य ही आत्मसमर्पण कर देगा।

'जैसी होनहार होती है तदनुसार ही बौद्धिक विचार बनने लगते हैं, पुरुषार्थ भी वैसा ही होने लगता है, निमित्तादि सहायक कारण-कलाप भी स्वत: वैसे ही मिलते जाते हैं।'

तात्पर्य यह है कि जब जैसा कार्य होना होता है, तदनुसार सभी अंतरंग एवं बहिरंग कारण-कलाप स्वत: मिल जाते हैं।

संभव है संजू के और उसके माता-पिता के दुर्दिनों का अंत आ गया हो। मानो इसी वजह से मेरे मन में यह विचार इतनी उग्रता से उठ रहे हों, अत: प्रयत्न करने में कोई हानि नहीं है।'

(क्रमश:)

वीतराग-विज्ञान पाठशाला का –

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ प्रतापनगर के सेक्टर 17 में दिनांक 17 जुलाई को जैन पाठशाला का सामूहिक पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाण्ड्या, श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री गौरवजी जैन, श्री संजयजी सेठी, श्री तरुणजी शाह, श्री सुशीलजी जैन आदि महानुभाव थे। इस अवसर पर डॉ. शीतलचंदजी जैन का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

– डॉ. बी.सी. जैन

फैडरेशन की सभी शाखायें ध्यान दें !

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर शाखाओं एवं सदस्यों को पुरस्कृत किये जाने हेतु विचारणीय मापदण्ड

पुरस्कार एवं पुरस्कारों के मापदण्ड निम्नांकित हैं –

1. वर्ष में विशिष्ट कार्य हेतु विशिष्ट शाखा पुरस्कार – जैसे कि शाखा द्वारा वर्ष में तीर्थयात्रा, आध्यात्मिक शिविर, बैण्ड संगीत मण्डली, नाटक मंचन आदि का आयोजन।

2. वर्ष की सर्वश्रेष्ठ शाखा पुरस्कार –

(१) व्यवस्थित कार्यालय हो – (क) साइन–बोर्ड हो (ख) निरन्तर पत्र–व्यवहार हो (ग) कार्यालय रिकॉर्ड व्यवस्थित हो।

(२) साप्ताहिक/मासिक/पाक्षिक मीटिंग नियमित रूप से होती हो।

(३) पाठशाला का संचालन व नवीन पाठशाला का गठन।

(४) नियमित स्वाध्याय का संचालन।

(५) सामूहिक पूजन का आयोजन – साप्ताहिक/पाक्षिक/मासिक विशेष पर्व।

(६) अन्तिम चुनाव तिथि (नियमित चुनाव का निर्धारित समय पर निष्पादन)।

(७) विशेष सामाजिक आयोजन एवं उनमें योगदान।

(८) शाखा की अपनी व्यक्तिगत विशेषतायें, जैसे : सेवादल, स्वयंसेवक, भजन–मण्डली, बैण्ड इत्यादि।

(९) गोष्ठी एवं विविध प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन।

3. वर्ष के श्रेष्ठ सदस्य पुरस्कार – जो सक्रिय सदस्य हैं एवं तन–मन–धन से फैडरेशन के लिये समर्पित हैं एवं उसकी गतिविधियों को बल प्रदान करते हैं –

4. वर्ष के श्रेष्ठ प्रान्तीय पदाधिकारी पुरस्कार।

5. वर्ष की मीटिंग में शत–प्रतिशत उपस्थिति पुरस्कार।

6. वर्ष में शत–प्रतिशत मासिक प्रगति विवरण प्रेषित करने वाली शाखा पुरस्कार।

7. वर्ष में शाखा द्वारा सत् साहित्य प्रकाशन पुरस्कार।

8. वर्ष में शाखा द्वारा निष्क्रिय शाखा सक्रिय करना अथवा नवीन शाखा गठन पुरस्कार।

9. वर्ष में सर्वाधिक सत् साहित्य बिक्री अथवा वितरण पुरस्कार।

10. वर्ष में सर्वाधिक शाखा सदस्य पुरस्कार (कुल जैन घरों के प्रतिशतानुसार)

11. वर्ष में राष्ट्रीय अधिवेशन में सर्वाधिक शाखा सदस्य सहभागिता पुरस्कार।

12. विशिष्ट सेवाओं के लिये अन्य व्यक्तिगत पुरस्कार।

आपकी शाखा से कम से कम 2 प्रतिनिधियों को अवश्य ही इस अधिवेशन में उपस्थित होना है। फैडरेशन सदस्यों की भोजन व आवास की समुचित व्यवस्था रखी गई है; अत: आप कितने सदस्य कब पधार रहे हैं, इसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को भेजें।

सभी शाखाओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि पुरस्कार निर्धारण हेतु अपने क्रियाकलापों एवं उपलब्धियों की सूचना हमारे केन्द्रीय कार्यालय को दिनांक 31 अगस्त 2016 तक अवश्य भिजवा देवें। **– महामंत्री**

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन की –
सभी शाखायें ध्यान दें

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ वार्षिक अधिवेशन दिनांक 10 अक्टूबर 2016 को तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में संपन्न होने जा रहा है। अधिवेशन से पूर्व सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि –

- यदि उनके पते में कोई परिवर्तन है तो वे अपने पते के परिवर्तन की अधिकारिक सूचना तुरंत हमारे केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य देवें।
- यदि आपकी शाखा की कार्यकारिणी और पदाधिकारियों में कोई भी परिवर्तन हुआ है तो नई कार्यकारिणी के सदस्यों की सूची (मोबाइल नं. व ई–मेल आईडी सहित) हमें तुरंत भेजें।
- आपकी शाखा के क्रियाकलापों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट हमें तुरंत भेजें।
- यदि कोई विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं तो उनके फोटोग्राफ भी भेजें।
- अधिवेशन में भाग लेने हेतु आपकी शाखा की ओर से सम्मेदशिखरजी पधारने वाले प्रतिनिधियों की सूची दिनांक 31 अगस्त तक अवश्य ही हमें भेज दें, ताकि उनके आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके। (आप जानते ही हैं कि यह अधिवेशन श्री समयसार विधान के अवसर पर हो रहा है, जिसके कारण साधर्मियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति के कारण पूर्व सूचना के बिना आवास व्यवस्था संभव नहीं होगी)
- यदि आप अधिवेशन में अपने कोई सुझाव या अपनी शाखा की रिपोर्ट प्रस्तुत करना चाहते हैं तो वह लिखित में दिनांक 31 अगस्त तक हमारे केन्द्रीय कार्यालय में अवश्य भेज दें। पूर्व सूचना के अभाव में अवसर मिलना संभव नहीं होगा।
- अधिवेशन में भाग लेने के लिये पधारे हुये प्रतिनिधियों की अन्तरंग मीटिंग दिनांक 9 अक्टूबर के सायंकाल संपन्न होगी।
- आपको अपनी शाखा के लिये सदस्यता फार्म आदि की आवश्यकता हो तो केन्द्रीय कार्यालय से मंगा लें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

29 अगस्त से 5 सित.	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
6 से 15 सितम्बर	**औरंगाबाद**	**दशलक्षण पर्व**
9 से 14 अक्टूबर	**सम्मेदशिखरजी**	**शिक्षण शिविर एवं समयसार विधान**

स्वर्ण जयंती के मायने (9)

तत्त्वप्रचार का स्वर्णयुग

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आत्मकल्याण व आत्मानुभूति एक नितांत व्यक्तिगत और एकाकी प्रक्रिया है, इसमें भीड़भाड़, भागदौड़ और कोलाहल को कोई स्थान नहीं, जबकि प्रचार तो नाम ही कोलाहल का है। उक्त दोनों की कार्य श्रावक की भूमिका वाले आत्मार्थी के जीवन के अभिन्न अंग हैं।

आत्मार्थी स्वाध्याय न करे, आत्मचिंतन न करे यह तो संभव नहीं, पर साथ ही वह तत्त्वचर्चा न करे, अपने इष्टजनों को आत्मकल्याण के लिये प्रेरित न करे, जनसामान्य को तत्त्वज्ञान से परिचित न कराये यह भी संभव नहीं है।

अरे ! आत्मकल्याण के लिये जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया ऐसे नग्न दिगम्बर संत भी जब अपने आपको इस विकल्प से पृथक् न कर पाये और उन्होंने ग्रंथों की रचना की, शिष्यों और जिज्ञासुओं को उपदेश दिये तो हम जैसे रागिओं के लिये यह कैसे संभव है कि जो कल्याणकारी लगे उस मार्ग पर अन्य लोगों को न लगायें ?

अन्य लोगों को आत्मकल्याण के मार्ग में जोड़ने के पीछे उनके प्रति करुणाबुद्धि व उनके कल्याण की भावना तो है ही पर साथ ही यह स्वयं अपने कल्याण के लिये भी अत्यंत आवश्यक है। दिन-रात आत्मा में लीन रहने वाले साधु भी जब समूह (संघ) में रहते हैं, आचार्यों और उपाध्यायों के सान्निध्य में रहते हैं, तब हम जैसे लोगों के लिये तो यह और भी आवश्यक है कि हम अपने जैसे ही आत्मार्थियों के समूह के साथ रहें। यदि हम अन्य लोगों को इस मार्ग में नहीं लगायेंगे तो हमें आत्मार्थियों का वह समाज कहाँ से उपलब्ध होगा, जिनके साथ हम अपनी आत्मकल्याणकारी व इसकी सहायक गतिविधियों में संलग्न रह सकें ?

हम गृहस्थ लोग इस मायने में अत्यंत कमजोर प्राणी हैं कि हममें प्रवाह के प्रतिकूल चलने या अपने मार्ग पर डटे रहने की क्षमता नहीं है, हमारी कमजोरी हमें प्रवाह के साथ बह जाने का कारण बन जाती है। हम अकेले ही जगत के भौतिकवादी, भोगोन्मुख प्रवाह के प्रभाव से अपने आपको बचा नहीं सकते हैं। यदि हम सबने मिलकर प्रवाह की दिशा ही नहीं बदल डाली, प्रवाह को सही दिशा में नहीं मोड़ लिया तो हम स्वयं उसके शिकार बन सकते हैं। इसके लिये हमें साथ चाहिये, समूह चाहिये, समाज चाहिये। अपने समान रुचि, विचारधारा और वृत्तियों वाला समाज चाहिये। अपने लिये ऐसे समाज की रचना हमें स्वयं ही करनी होगी, प्रयत्नपूर्वक।

एक आत्मार्थी के लिये यही उचित है कि वह अपनी भूमिका के अनुरूप स्वयं तो स्वाध्याय में रत रहे ही, साथ ही साथ अपनी शक्ति के अनुरूप यथासंभव अन्य लोगों को भी इस मार्ग पर लगाये और इसप्रकार के कार्यों में जुटे हुये लोगों को सहयोग करे, उनकी अनुमोदना करे।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने भी यही किया।

आत्मकल्याण हेतु वे स्वयं तो स्वाध्याय में रत रहे ही, साथ ही अन्य लोगों को भी यह मार्ग बतलाने के लिये प्रवचन व तत्त्वचर्चा के माध्यम से प्रयत्नशील रहे। शिक्षण शिविरों का आयोजन करके अन्य नये-नये लोगों को तत्त्व से परिचित करवाने में सहायक बने। जिनवाणी का प्रकाशन करके व उसे कम से कम मूल्य में अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के उपक्रम प्रारम्भ किये तथा इन कार्यों में सहायक बनने वाले लोगों को यथासंभव प्रोत्साहित भी किया।

पूज्य गुरुदेवश्री की मंगल प्रेरणा से स्थापित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने उन्हीं के आदर्शों को अपनाया, उन्हीं की कार्यप्रणाली अपनाई उन्हीं के क्रियाकलापों को आगे बढाया।

डॉ. भारिल्ल के निर्देशन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने वैज्ञानिक विधि अपनाकर, अपने अहर्निश क्रियाकलापों से तत्त्वप्रचार को एक नयी दिशा प्रदान की, द्रुतगति व नये आयाम प्रदान किये, जिसका प्रतिफल आज हम सबके सामने है।

आज सिर्फ भारत ही नहीं विश्वभर में बसे हुए जैन समाज में 'भगवान आत्मा' की चर्चा है। विगत 30 से अधिक वर्षों से निरंतर प्रतिवर्ष डॉ. भारिल्ल अमेरिका के अनेक नगरों में जाते हैं, परिणामस्वरूप आज अमेरिका के नगर-नगर में लोग समयसार और प्रवचनसार जैसे ग्रंथों के माध्यम से गहन-गम्भीर स्वाध्याय करते हैं। उनके द्वारा स्थापित संस्था 'जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका' **(JAANA)** द्वारा प्रतिवर्ष वहाँ शिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है, जिसमें डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त अन्य विद्वान भी पधारते हैं।

आज अमेरिका के घर-घर में आचार्यों के मूल ग्रंथों सहित वर्तमान विद्वानों द्वारा रचित जिनवाणी विद्यमान है।

सम्पूर्ण देश में आज वीतराग विज्ञान पाठशालाओं का जाल फैला हुआ है, जिनमें कोमलमति बालकों को जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धांतों से परिचित करवाया जाता है।

नगर-नगर में प्रतिदिन सामूहिक स्वाध्याय का क्रम निरंतर चलता है, जिनमें स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त सी.डी. के माध्यम से पूज्य गुरुदेवश्री सहित अन्य विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होता है।

टेलिविजन पर भी पूज्य गुरुदेवश्री, डॉ. भारिल्ल एवं अन्य विद्वानों के प्रवचनों का लाभ समाज को घर बैठे ही प्राप्त हो रहा है।

देश के घर-घर में प्रचुर मात्रा में जिनवाणी विराजमान है। आचार्यों के मूल ग्रंथों के अतिरिक्त सामान्यजन के स्वाध्याय हेतु वर्तमान भाषा में सरल और सुबोध शैली में जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धांतों की व्याख्या करने वाले ग्रंथों का समावेश है। उल्लेखनीय है कि इसप्रकार का साहित्य अनेक भाषाओं में अनुवादित होकर उपलब्ध है।

महाविद्यालयों के माध्यम से 1000 से अधिक की संख्या में जैनदर्शन के आधिकारिक विद्वान तैयार होकर देशभर में स्थापित हो गये हैं, जिनके माध्यम से स्थानीय स्तर पर भी जिनवाणी के गहन स्वाध्याय की गतिविधियाँ निरंतर चलती रहती है। भगवान महावीर के बाद विगत 2600 वर्षों में शायद ही कभी ऐसा हुआ हो कि देश में एक साथ इतनी बड़ी मात्रा में जैनधर्म के मर्मज्ञ विद्वान विद्यमान रहे हों।

पर्वाधिराज दशलक्षण में व अन्य अवसरों पर 600 से अधिक विद्वान

एक साथ प्रवचनार्थ जाते हैं।

युवा फैडरेशन के माध्यम से युवावर्ग न सिर्फ समाज में सक्रिय हुआ है वरन् धर्म व अध्यात्म का गहन परिचय प्राप्त करके स्वयं के कल्याण के साथ-साथ तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में भी सक्रिय है।

शिक्षण शिविरों की तो मानो बाढ ही आ गयी है। सैंकड़ों विद्वानों के सहयोग से सैंकड़ों नगरों में एक साथ ग्रुप शिविरों का आयोजन होता है, जिनमें हजारों की संख्या में बालक-बालिकाएँ जैनदर्शन का सामान्य परिचय प्राप्त करते हैं।

आवश्यकतानुसार स्थान-स्थान पर अनेकों नवीन जिनमंदिरों और स्वाध्याय भवनों का निर्माण हो रहा है। देश के अनेक भागों में अनेकों विशाल संकुलों का निर्माण हुआ है, जिनके माध्यम से देशभर में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ प्रभावशाली ढंग से संचालित हो रही हैं।

प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली अनेकों मासिक व पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी लोग तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं व देशभर में चलने वाली तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से परिचित होते हैं।

इसप्रकार हम पाते हैं कि यह वर्तमान काल मात्र टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का स्वर्णजयंती वर्ष ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में तत्त्वप्रचार का स्वर्णयुग है।

शोक समाचार

(1) अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्री अमोलकचंदजी 'बंधु' का दिनांक 13 जुलाई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अशोकनगर के स्वाध्याय मंदिर एवं मुमुक्षु मण्डल के संस्थापक अध्यक्ष थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 501-501/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) भोपाल (म.प्र.) निवासी श्रीमती धनश्रीबाईजी धर्मपत्नी श्री कपूरचंदजी डैडी का दिनांक 9 जुलाई को वैराग्यपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं एवं भोपाल मुमुक्षु मण्डल की प्रेरणा स्रोत थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 501-501/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) सतना (म.प्र.) निवासी श्रीमती शांतिबाई जैन धर्मपत्नी स्व. नीरज जैन का दिनांक 30 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

(4) हिंगोली (महा.) निवासी स्व. श्री मांगीलालजी जैन की पुण्यस्मृति में श्री सुरेशजी जैन हिंगोली द्वारा 1100/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

(5) जबलपुर (म.प्र.) निवासी श्री सुरेशचंदजी का दिनांक 26 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे। गुरुदेवश्री का प्रत्यक्ष समागम आपने अनेकों बार सोनगढ में प्राप्त किया था। आपकी प्रेरणा से ही आपके सुपुत्र एवं टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री ने टोडरमल महाविद्यालय में अध्यापन कार्य किया था। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2202/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2016

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 14 अगस्त 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
सोमवार 15 अगस्त 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
मंगलवार 16 अगस्त 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

दृष्टि का विषय

28 सातवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रदेश की तरह गुण भी जुदे नहीं हो सकते हैं; लेकिन वे भी जुदे-जुदे हैं। अलग-अलग नहीं होना - यह द्रव्य की पहचान है और अलग-अलग होना - यह पर्याय की पहचान है।

गुण को, प्रदेश को, काल के खण्ड को - इन सभी को पर्याय कहते हैं; क्योंकि यह सब पर्यायार्थिकनय के विषय हैं।

क्षेत्र की अखण्डता को असंख्यप्रदेशी कहा जाता है। जब असंख्य प्रदेशी कहा जाता है, तब प्रदेश विशेष बन जाते हैं अर्थात् असंख्यप्रदेशी एक अखण्ड वस्तु का बोध कराता है तथा जब असंख्य प्रदेश कहा जाता है, तब वह भेद का बोध कराता है।

भगवान आत्मा में असंख्यप्रदेश नहीं है, वह असंख्यप्रदेशी है; भगवान आत्मा में अनन्तगुण नहीं हैं, आत्मा अनन्तगुणमय है।

यदि अनुभव में अलग-अलग प्रदेश ख्याल में आते हैं तो आत्मा का अनुभव नहीं होगा, अपितु विकल्प की ही उत्पत्ति होगी; अनन्तगुण अलग-अलग ख्याल में आएँ तो भी आत्मा का अनुभव नहीं होगा, अपितु विकल्प की उत्पत्ति होगी; यदि अलग-अलग पर्यायें भी अनुभव में या ख्याल में आती हैं, तब भी आत्मा का अनुभव नहीं होगा, अपितु विकल्प की ही उत्पत्ति होगी। **प्रदेश, गुण और पर्याय - तीनों के साथ एक ही नियम काम कर रहा है।**

जब क्षेत्र संबंधी भेद का विकल्प, काल संबंधी भेद का विकल्प, द्रव्य संबंधी भेद का विकल्प और भाव संबंधी भेद का विकल्प - ये सभी विकल्प नहीं होते हैं, तब वह अनुभूति का काल है। उस समय जो द्रव्य, दृष्टि का विषय बनता है; वही द्रव्यार्थिकनय का विषयरूप द्रव्य है।(क्रमशः)

विद्वानों से अनुरोध

प्रवचनार्थ जाने वाले विद्वानों से अनुरोध है कि यदि उन्होंने अपनी स्वीकृति अभी तक नहीं भेजी है तो तत्काल जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें। **- मंत्री**

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

● दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। संपर्क सूत्र - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.- 0141-2705581, 2707458,**
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

इन्टरनेशनल यूथ कन्वेन्शन

मुम्बई : यहाँ माटुंगा स्थित विशाल हॉल में दिनांक 24 जुलाई 2016 को 'इन्टरनेशनल यूथ कन्वेन्शन' का वृहद् स्तर पर आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर प्रात: 9 बजे से रात्रि 9 बजे तक अभूतपूर्व ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई, जिसमें 500 से अधिक साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

प्रथम सत्र में जयपुर से पधारे डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने 'कौन कर्त्ता-भोक्ता' विषय को आधार बनाकर जैनदर्शन के मूल विषय अकर्त्तावाद पर लगभग 3 घंटे के मार्मिक व्याख्यान में गहराई से प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र में विदुषी ज्ञप्ति जैन ने विशेष रूप से तैयार किये गये पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन से 'यदि चूक गये तो' विषय को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई ने लगभग 2 घंटे तक 'मेरा ठिकाना क्या' विषय को आधार बनाकर चतुर्गतिरूप अस्थायी ठिकाने का अभाव कर सादि अनंत काल के लिये शाश्वत ठिकाने सिद्धपुरी तक पहुंचने की चर्चा की।

रात्रिकालीन अन्तिम सत्र शंका-समाधान के रूप में आयोजित हुआ, जिसमें सभा में उपस्थित श्रोताओं की सभी शंकाओं का मार्मिक समाधान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा किया गया। इस प्रसंग पर पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित किशोरजी शास्त्री एवं पण्डित अभिषेकजी जोगी मंचासीन थे। रात्रिकालीन सत्र के पूर्व पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ एवं पण्डित प्रफुल्लजी शास्त्री के सान्निध्य में जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन हुआ।

समस्त कार्यक्रम पण्डित देवांगजी गाला के कुशल संचालन में श्री मणिलाल कारिया एवं श्री रमेशभाई बुरिचा के सहयोग से संपन्न हुये।

आगामी कन्वेन्शन 30 दिसम्बर से 1 जनवरी 2017 तक देवलाली में आयोजित करने की घोषणा की गई।

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :– पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में तृतीय अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं। जो भी भाई–बहिन इस योजना से जुड़ना चाहते हैं, वे 09785643202 पर संपर्क करें।

प्रश्न : संसारी जीव बहुत काल एकेन्द्रिय पर्यायों में रहता है, कथन को स्पष्ट करें।

उत्तर : त्रस पर्याय का उत्कृष्ट काल तो साधिक 2 हजार सागर ही है और एकेन्द्रिय का उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल है। इसलिये संसार में जीव बहुत काल एकेन्द्रिय पर्यायों में ही रहता है। अनादि से नित्य निगोद में रहते हुए जीव भाड़ में भुनते हुए चनों में उचटे हुए चने की तरह इतर निगोद, पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति में बहुत काल रहता है।

प्रश्न : एकेन्द्रिय पर्याय के दु:खों का संक्षिप्त विवरण दें।

उत्तर : जहाँ कषाय बहुत और शक्ति हीन हो वहाँ बहुत दु:ख होता है। एकेन्द्रिय जीवों की शक्ति सर्वप्रकार अत्यंत मंद है और कषाय बहुत है; अत: एकेन्द्रिय पर्यायों में ऐसा महान दु:ख है कि वे भोगते हैं और केवली जानते हैं।

प्रश्न : विकलत्रय एवं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के दु:खों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : द्वि–इन्द्रियादिक जीवों के दु:ख भी एकेन्द्रियवत् जानना। इसमें विशेष इतना है कि इन जीवों में शान्ति की कुछ अधिकता होती है; अत: कषायों के अनुसार कार्य करने में उनकी कुछ प्रवृत्ति प्रत्यक्ष दिखाई देती है; परन्तु ये भी तीव्रकषाय के कारण परम दु:खी प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।

प्रश्न : नरक गति के दु:खों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : नरक गति में जीवों को कषाय की तीव्रता व विषयों की इच्छा बहुत होती है और इष्ट विषयों की सामग्री का सर्वथा अभाव तथा अनिष्ट विषय की भरपूर सामग्री होने से नारकी जीव सर्वप्रकार से बहुत दु:खी है। क्रोधादि सर्व कषायों की अतितीव्रता होने से नारकी जीव सदैव अत्यंत दु:खी ही हैं।

प्रश्न : तिर्यंच गति के दु:खों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : तिर्यंच गति के जीवों में भी कषाय की तीव्रता होने से विषयों की इच्छा बहुत होती है; परन्तु उसकी पूर्ति के साधन दिखाई नहीं देते। वे वध–बन्धनादि दु:ख से प्रत्यक्ष महादु:खी दिखाई देते हैं।

प्रश्न : मनुष्य गति के दु:खों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मनुष्य गति में जीव पहले गर्भ में 9 माह रहकर असह्य दु:ख का वेदन करता है। यौवनावस्था में विषयों की और कषायों की तीव्र लालसा से सतत् दु:खी रहता है और वृद्धावस्था में फिर शक्तिहीन हो पराधीनता के कारण अकथनीय मानसिक/शारीरिक दु:खों को भोगता है।

प्रश्न : देवगति के दु:खों का वर्णन कीजिए।

उत्तर : देवपर्याय में पुण्योदय से अपेक्षाकृत अनुकूलता दिखाई देने पर भी कषायों के कारण इर्ष्या और पराधीनताजन्य दु:ख होने से देवों में भी मानसिक पीड़ा पायी जाती है। यहाँ इतना विशेष है कि ऊपर–ऊपर के देवों में कषाय शक्ति घटती जाने से आकुलता भी घटती जाती है। इसलिये औरों की अपेक्षा देवगति में सुख है ऐसा भी कहते हैं परन्तु परमार्थ से कषायभाव होने से दु:ख ही है।

प्रश्न : मनुष्य गति को चारों गतियों में प्रधान क्यों कहा ?

उत्तर : एक मनुष्य पर्याय ही ऐसी है, जिसमें यह जीव अपने भला होने का उपाय करे तो हो सकता है। इस पर्याय में धर्मसाधन कर यह जीव रत्नत्रय प्राप्त कर सकता है; अत: इसे चारों गतियों में प्रधान कहा।

प्रश्न : दु:ख का मूल कारण चार प्रकार की इच्छाओं का निरूपण कीजिए।

उत्तर : चार प्रकार की इच्छायें निम्न हैं –

(1) विषय सामग्री को ग्रहण करने की इच्छा।

(2) कषाय भाव के अनुसार कार्य करने की इच्छा।

(3) पापोदय से प्राप्त अनिष्ट संयोगों को दूर करने की इच्छा।

(4) उपरोक्त इच्छाओं की पूर्तिरूप प्रवर्तने की इच्छा जो पुण्योदय के अनुसार होती है।

प्रश्न : दु:ख से निवृत्ति का मूल उपाय क्या है ?

उत्तर : मिथ्यात्व, अज्ञान और असंयम से जीव दु:खी हो रहा है; अत: इसे दूर कर रत्नत्रय की प्राप्ति ही दु:ख निवृत्ति (सुख प्राप्ति) का एकमात्र उपाय है।

प्रश्न : ऐसा सुख किस प्रकार और कहाँ संभव है ?

उत्तर : जीव को कषायभाव से विषयों की इच्छा बहुत होती है और कषायभाव के अनुसार कार्य नहीं बनने से जीव बहुत दु:खी होता है; अत: कषायभाव मिटकर इच्छा का अभाव हो वही सुखी होने का उपाय है। ऐसा सुख मोक्ष अवस्था में पाया जाता है; अत: मोक्षरूप अवस्था ही हितकर और उपादेय है। जो जीव सुखी होना चाहते हों, वे संसार और मोक्ष का स्वरूप पहचानकर मोक्ष का साधन करें, तो सुखी हों।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) आत्मसाधना केन्द्र-दिल्ली : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 12 से 19 जुलाई तक श्री पंचमेरु नंदीश्वर मण्डल विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर ब्र. अमित भैया विदिशा द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर द्वारा संपन्न हुये। **- अजितप्रसाद जैन**

(2) करहल (उ.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर में सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अमित जैन 'अरिहंत' एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनांक 18 जुलाई को 'संस्कार' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लगभग 300 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अमित जैन 'अरिहंत', पण्डित रमेशचंदजी करहल, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित यश शास्त्री कोटा द्वारा संपन्न हुये। स्थानीय विद्वानों में पण्डित अरविन्दजी, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी शास्त्री आदि का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

(3) अजमेर (राज.) : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पुरानी मंडी स्थित सीमंधर जिनालय में श्री नवलब्धि विधान का आयोजन विधानाचार्य पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर के सान्निध्य में किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अरुणजी मोदी सागर द्वारा प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। **- विनय लुहाड़िया**

आवश्यक सूचना

प्रिय साधर्मी,

सस्नेह जय जिनेन्द्र !

आपको यह जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि वर्ष 2016-17 श्री टोडरमल स्मारक भवन के स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी शृंखला में वीतराग विज्ञान पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

आपसे निवेदन है कि आप विशेषांक हेतु श्री टोडरमल स्मारक भवन एवं यहाँ से संचालित गतिविधियों के बारे में अपने विचार हमें लेख, निबंध, कविता, संस्मरण, फोटो आदि के रूप में प्रेषित करें। संपादक मंडल द्वारा चयनित रचनाओं को विशेषांक में प्रकाशित किया जायेगा।

कृपया पासपोर्ट साइज के फोटो सहित आप कहाँ व किस पद पर कार्यरत हैं, इसकी जानकारी भी देवें। **- अच्युतकांत जैन**

लन्दन में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

लन्दन (इंग्लैण्ड) : यहाँ श्री महावीर स्वामी जैन टेम्पल में दिनांक 8 से 13 जुलाई तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरान्त समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति हुई। रात्रि में प्रतिदिन तीन लोक के सामान्य स्वरूप को बताते हुये सूर्य चन्द्र आदि ज्योतिष देवों के स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। एक दिन विशेष रूप से टोडरमल स्मारक की स्वर्ण जयंती हेतु सम्मेदशिखर पधारने का आमंत्रण दिया गया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, श्री पवनजी जैन अलीगढ के विचारों का प्रसारण किया गया। साथ ही टोडरमल स्मारक एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के संदर्भ में संजीवजी गोधा एवं विपिनजी के उद्बोधन का लाभ मिला।

इसी प्रसंग पर जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका द्वारा **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का 35 वर्षों से अमेरिका** में किये जा रहे तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार के लिये **शॉल एवं प्रशस्ति पत्र** प्रदानकर श्री अतुलभाई खारा सहित अन्य सदस्यों द्वारा सम्मान किया गया।

समस्त आयोजन **(JAANA)** के अध्यक्ष श्री अतुलभाई खारा के कुशल निर्देशन में डलास के युवा साथियों की टीम के साथ श्रीमती चारुबेन खारा, श्री हिमान्शुभाई न्यूजर्सी परिवार, श्रीमती नीरजा, श्री राजेन्द्रजी, श्री पंकजभाई परिवार न्यूजर्सी के साथ-साथ न्यूजर्सी के और अनेक सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का सहयोग मिला। शिविर में बाल कक्षायें नियतिबेन, श्रीमती संस्कृति, श्रीमती अणिमा एवं कु. आराधना भारिल्ल द्वारा ली गई।

संपूर्ण आयोजन में अमेरिका के विविध प्रांतों से पधारे हुये लगभग 350 आत्मार्थी मुमुक्षु बन्धुओं ने धर्मलाभ लिया।

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127